যে ভাৰতীয় ক্ৰীড়া প্ৰাধিকৰণৰ তৰফৰ পৰা পূৰ্বোত্তৰত এনেদৰে থলুৱা খেলসমূহ পুনৰুদ্ধাৰৰ বাবে প্ৰচেষ্টা চলালেও সেই প্ৰচেষ্টা এবাৰতে থমকি ৰয় । ইণ্ডিজেনাছ্ গেমছৰ সৈতে সম্পৰ্ক ৰখা ঢোপ খেলৰ সৈতে বৰপেটা অঞ্চলৰ ঐতিহ্যমণ্ডিত ধেমনা অনা খেলৰ অনেক মিল পোৱা যায় । ধেমনা অনা খেল সাধাৰণতে শীতকালত অনুষ্ঠিত হৈছিল ।

145. স্বৰ্গদেউ ৰুদ্ৰসিংহৰ দিনত কিহে সৰ্বাধিক পৃষ্ঠপোষকতা লাভ কৰিছিল ?

(1) খেল-ধেমালিয়ে

(2) লুপ্তপ্ৰায় ক্ৰীড়াই

(3) জলক্ৰিয়াই

(4) মঞ্চ-নিৰ্মানে

146. আহোম যুগত কি উপলক্ষে এসপ্তাহ জোৰা খেল ধেমালিৰ আয়োজন কৰা হৈছিল ?

(1) ৰাজ পৰিয়ালত পুত্ৰৰ জন্ম

(2) ৰাজ অভিষেক আৰু ৰাজ পৰিয়ালত পুত্ৰৰ জন্ম

(3) ক্ৰীড়া সমাৰোহ

(4) ৰাজ অভিষেক

147. নাওখেল আৰু মালযুঁজ কোন সময়ত অনুষ্ঠিত কৰা হৈছিল ?

(1) ৰাজ অভিষেকৰ সময়ত

(2) পেভিলিয়ন নিৰ্মান হোৱাৰ পিছত

(3) ব্ৰহ্মপুত্ৰত পানী কমিলে

(4) বিহুৰ সময়ত

148. পুৰনি 'হাওগুদু' খেলক কিহৰ লগত তুলনা কৰিব পাৰি ?

(1) ৰেষ্টলিঙৰ লগত

(2) বুন্দিয়া হাউ খেলৰ লগত

(3) কাবাডীৰ লগত

(4) টাংগুটিৰ লগত

149. ব্ৰিটিছৰ আমোলত ঢেকেৰিপাৰ অঞ্চলত কি খেলৰ সমাৰোহ অনুষ্ঠিত হৈছিল ?

(1) ঢোপ খেলৰ

(2) এবিধ জনপ্ৰিয় খেলৰ

(3) ঘিলা খেলৰ

(4) জব্বৰ ঘানা খেলৰ

150. আমাৰ থলুৱা খেলবিলাকক একত্ৰিত কৰি সংৰক্ষিত কৰাৰ চেষ্টা কোনে কৰিছিল ?

(1) ভাৰত চৰকাৰে

(2) ব্ৰিটিছ চৰকাৰে

(3) আহোম ৰজাই

(4) অসম খেল প্ৰাধিকৰণে

READ CAREFULLY THE FOLLOWING INSTRUCTIONS :

1. Out of the four alternatives for each question, only one circle for the correct answer is to be darkened completely with Blue/Black Ball Point Pen on Side-2 of the OMR Answer Sheet. The answer once marked is not liable to be changed.
2. The candidates should ensure that the Answer Sheet is not folded. Do not make any stray marks on the Answer Sheet. Do not write your Roll No. anywhere else except in the specified space in the Answer Sheet.
3. Handle the Test Booklet and Answer Sheet with care, as under no circumstances (except for discrepancy in Test Booklet Code or Number and Answer Sheet Code or Number), another set will be provided.
4. The candidates will write the correct Test Booklet Code and Number as given in the Test Booklet / Answer Sheet in the Attendance Sheet.
5. Candidates are not allowed to carry any textual material, printed or written, bits of papers, pager, mobile phone, electronic device or any other material except the Admit Card inside the examination hall/room.
6. Each candidate must show on demand his / her Admission Card to the Invigilator.
7. No candidate, without special permission of the Superintendent or Invigilator, should leave his / her seat.
8. The candidates should not leave the Examination Hall without handing over their Answer Sheet to the Invigilator on duty and sign the Attendance Sheet twice. Cases where a candidate has not signed the Attendance Sheet a second time will be deemed not to have handed over the Answer Sheet and dealt with as an unfair means case.
9. Use of Electronic / Manual Calculator is prohibited.
10. The candidates are governed by all Rules and Regulations of the Board with regard to their conduct in the Examination Hall. All cases of unfair means will be dealt with as per Rules and Regulations of the Board.
11. No part of the Test Booklet and Answer Sheet shall be detached under any circumstances.
12. **On completion of the test, the candidate must hand over the Answer Sheet to the Invigilator in the Room / Hall. *The candidates are allowed to take away this Test Booklet with them.***

निम्नलिखित निर्देश ध्यान से पढ़ें :

1. प्रत्येक प्रश्न के लिए दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर के लिए OMR उत्तर पत्र के पृष्ठ-2 पर केवल एक वृत्त को ही पूरी तरह नीले/काले बॉल पॉइन्ट पेन से भरें । एक बार उत्तर अंकित करने के बाद उसे बदला नहीं जा सकता है ।
2. परीक्षार्थी सुनिश्चित करें कि इस उत्तर पत्र को मोड़ा न जाए एवं उस पर कोई अन्य निशान न लगाएँ । परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक उत्तर पत्र में निर्धारित स्थान के अतिरिक्त अन्यत्र न लिखें ।
3. परीक्षा पुस्तिका एवं उत्तर पत्र का ध्यानपूर्वक प्रयोग करें, क्योंकि किसी भी परिस्थिति में (केवल परीक्षा पुस्तिका एवं उत्तर पत्र के संकेत या संख्या में भिन्नता की स्थिति को छोड़कर) दूसरी परीक्षा पुस्तिका उपलब्ध नहीं करायी जाएगी ।
4. परीक्षा पुस्तिका / उत्तर पत्र में दिए गए परीक्षा पुस्तिका संकेत व संख्या को परीक्षार्थी सही तरीके से हाज़िरी-पत्र में लिखें ।
5. परीक्षार्थी द्वारा परीक्षा हॉल/कक्ष में प्रवेश कार्ड के सिवाय किसी प्रकार की पाठ्य सामग्री, मुद्रित या हस्तलिखित, कागज़ की पर्चियाँ, पेजर, मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण या किसी अन्य प्रकार की सामग्री को ले जाने या उपयोग करने की अनुमति नहीं है ।
6. पूछे जाने पर प्रत्येक परीक्षार्थी, निरीक्षक को अपना प्रवेश-कार्ड दिखाएँ ।
7. अधीक्षक या निरीक्षक की विशेष अनुमति के बिना कोई परीक्षार्थी अपना स्थान न छोड़ें ।
8. कार्यरत निरीक्षक को अपना उत्तर पत्र दिए बिना एवं हाज़िरी-पत्र पर दुबारा हस्ताक्षर किए बिना परीक्षार्थी परीक्षा हॉल नहीं छोड़ेंगे । यदि किसी परीक्षार्थी ने दूसरी बार हाज़िरी-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए तो यह माना जाएगा कि उसने उत्तर पत्र नहीं लौटाया है और यह अनुचित साधन का मामला माना जाएगा ।
9. इलेक्ट्रॉनिक / हस्तचालित परिकलक का उपयोग वर्जित है ।
10. परीक्षा-हॉल में आचरण के लिए परीक्षार्थी बोर्ड के सभी नियमों एवं विनियमों द्वारा नियमित हैं । अनुचित साधनों के सभी मामलों का फैसला बोर्ड के नियमों एवं विनियमों के अनुसार होगा ।
11. किसी हालत में परीक्षा पुस्तिका और उत्तर पत्र का कोई भाग अलग न करें ।
12. **परीक्षा सम्पन्न होने पर, परीक्षार्थी कक्ष / हॉल छोड़ने से पूर्व उत्तर पत्र कक्ष-निरीक्षक को अवश्य सौंप दें । *परीक्षार्थी अपने साथ इस परीक्षा पुस्तिका को ले जा सकते हैं ।***

SEAL

Test Booklet No.
परीक्षा पुस्तिका संख्या

378

This booklet contains 20 pages.
इस पुस्तिका में 20 पृष्ठ हैं ।

JBC – 12A

PAPER I / प्रश्न-पत्र I

PART IV & V / भाग IV & V

Assamese Language Supplement
असमी भाषा परिशिष्ट

Test Booklet Code
परीक्षा पुस्तिका संकेत

F

Do not open this Test Booklet until you are asked to do so.
इस परीक्षा पुस्तिका को तब तक न खोलें जब तक कहा न जाए ।

Read carefully the Instructions on the Back Cover (Page 19 & 20) of this Test Booklet.
इस परीक्षा पुस्तिका के पिछले आवरण (पृष्ठ 19 व 20) पर दिए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें ।

For instructions in Assamese see Page 2 of this booklet. / असमी में निर्देशों के लिए इस पुस्तिका का पृष्ठ 2 देखें ।

INSTRUCTIONS FOR CANDIDATES

1. This booklet is a supplement to the Main Test Booklet for those candidates who wish to answer **EITHER** Part IV (Language I) **OR** Part V (Language II) in **ASSAMESE** language, but **NOT BOTH**.
2. Candidates are required to answer Parts I, II, III from the Main Test Booklet and Parts IV and V from the languages chosen by them.
3. Questions on English and Hindi languages for Part IV and Part V have been given in the Main Test Booklet. Language Supplements can be asked for separately.
4. Use **Blue / Black Ball Point Pen only** for writing particulars on this page / marking responses in the Answer Sheet.
5. The CODE for this Language Booklet is **F**. Make sure that the CODE printed on **Side-2** of the Answer Sheet and on your Main Test Booklet is the same as that on this Language Supplement Booklet. In case of discrepancy, the candidate should immediately report the matter to the Invigilator for replacement of the Language Supplement Test Booklet.
6. This Test Booklet has **two** Parts, IV and V, consisting of **60** Objective Type Questions, each carrying 1 mark :
   Part IV : Language I – (Assamese) *(Q. 91 to Q. 120)*
   Part V : Language II – (Assamese) *(Q. 121 to Q. 150)*
7. Part IV contains 30 questions for Language I and Part V contains 30 questions for Language II. In this Test Booklet, only questions pertaining to Assamese language have been given. **In case the language/s you have opted for as Language I and/or Language II is a language other than Assamese, please ask for a Test Booklet that contains questions on that language. The languages being answered must tally with the languages opted for in your Application Form.**
8. **Candidates are required to attempt questions in Part V (Language II) in a language other than the one chosen as Language I (in Part IV) from the list of languages.**
9. Rough work should be done only in the space provided in the Test Booklet for the same.
10. The answers are to be recorded on the OMR Answer Sheet only. Mark your responses carefully. No whitener is allowed for changing answers.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. यह पुस्तिका मुख्य परीक्षा पुस्तिका की एक परिशिष्ट है, उन परीक्षार्थियों के लिए जो **या** तो भाग IV (भाषा I) **या** भाग V (भाषा II) **असमी** भाषा में देना चाहते है, लेकिन **दोनों नहीं** ।
2. परीक्षार्थी भाग I, II, III के उत्तर मुख्य परीक्षा पुस्तिका से दें और भाग IV व V के उत्तर उनके द्वारा चुनी भाषाओं से ।
3. अंग्रेज़ी व हिन्दी भाषा पर प्रश्न मुख्य परीक्षा पुस्तिका में भाग IV व भाग V के अन्तर्गत दिए गए हैं । भाषा परिशिष्टों को आप अलग से माँग सकते हैं ।
4. इस पृष्ठ पर विवरण अंकित करने एवं उत्तर पत्र पर निशान लगाने के लिए **केवल नीले/काले बॉल पॉइंट पेन** का प्रयोग करें ।
5. इस भाषा पुस्तिका का **संकेत** है **F**. यह सुनिश्चित कर लें कि इस भाषा परिशिष्ट पुस्तिका का संकेत, उत्तर पत्र के **पृष्ठ-2** एवं मुख्य प्रश्न पुस्तिका पर छपे संकेत से मिलता है । अगर यह भिन्न हो तो परीक्षार्थी दूसरी भाषा परिशिष्ट परीक्षा पुस्तिका लेने के लिए निरीक्षक को तुरन्त अवगत कराएँ ।
6. इस परीक्षा पुस्तिका में **दो** भाग IV और V हैं, जिनमें **60** वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जो प्रत्येक 1 अंक का है :
   भाग IV : भाषा I — (असमी) *(प्र. 91 से प्र. 120)*
   भाग V : भाषा II — (असमी) *(प्र. 121 से प्र. 150)*
7. भाग IV में भाषा I के लिए 30 प्रश्न और भाग V में भाषा II के लिए 30 प्रश्न दिए गए हैं । इस परीक्षा पुस्तिका में केवल असमी भाषा से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं । **यदि भाषा I और/या भाषा II में आपके द्वारा चुनी गई भाषा(एँ) असमी के अलावा है तो कृपया उस भाषा वाली परीक्षा पुस्तिका माँग लीजिए । जिन भाषाओं के प्रश्नों के उत्तर आप दे रहे हैं वह आवेदन पत्र में चुनी गई भाषाओं से अवश्य मेल खानी चाहिएँ।**
8. **परीक्षार्थी भाग V (भाषा II) के लिए, भाषा सूची से ऐसी भाषा चुनें जो उनके द्वारा भाषा I (भाग IV) में चुनी गई भाषा से भिन्न हो ।**
9. रफ कार्य परीक्षा पुस्तिका में इस प्रयोजन के लिए दी गई खाली जगह पर ही करें ।
10. सभी उत्तर केवल OMR उत्तर पत्र पर ही अंकित करें । अपने उत्तर ध्यानपूर्वक अंकित करें । उत्तर बदलने हेतु श्वेत रंजक का प्रयोग निषिद्ध है ।

Name of the Candidate (in Capitals) : ____________________
परीक्षार्थी का नाम (बड़े अक्षरों में) :
Roll Number (अनुक्रमांक) : in figures (अंकों में) ____________________
: in words (शब्दों में) ____________________
Centre of Examination (in Capitals) : ____________________
परीक्षा केन्द्र (बड़े अक्षरों में) :
Candidate's Signature : ____________________ Invigilator's Signature : ____________________
परीक्षार्थी के हस्ताक्षर : निरीक्षक के हस्ताक्षर :
Facsimile signature stamp of Centre Superintendent ____________________

SEAL

এই পৰীক্ষা বহীত 20টা পৃষ্ঠা আছে

পৰীক্ষা বহীখন কোড **F**

JBC – 12A

কাকত I

খণ্ড IV & V

অসমীয়া ভাষা

এই পৰীক্ষা বহীখন তোমাক খুলিবলৈ নোকোৱালৈকে নুখুলিবা ।

এই পৰীক্ষা বহীখনৰ ওপৰৰ পৃষ্ঠাটিত (পৃষ্ঠা 19 আৰু 20) থকা নিৰ্দেশনা মনোযোগেৰে পঢ়া ।

পৰীক্ষাৰ্থীৰ বাবে নিৰ্দেশনা :

1. এই বহীখন মুখ্য পৰীক্ষণৰ বহীখনৰ সহায়ক হিচাপে সেই সকল পৰীক্ষাৰ্থীক দিয়া হৈছে যিয়ে **অসমীয়া** ভাষাৰ খণ্ড IV (ভাষা I) বা খণ্ড V (ভাষা II) উত্তৰ কৰিব বিচাৰে । কিন্তু দুয়োটা খণ্ডৰ উত্তৰ কৰিব নোৱাৰিব ।
2. পৰীক্ষাৰ্থী সকলে মুখ্য পৰীক্ষা বহীৰ পৰা I, II, III খণ্ডৰ উত্তৰ কৰিব লাগিব আৰু তেওঁলোকে নিৰ্বাচন কৰা ভাষাৰ খণ্ড IV আৰু V কৰিব লাগিব ।
3. ইংৰাজী আৰু হিন্দী ভাষাৰ IV আৰু V খণ্ডৰ প্ৰশ্নসমূহ মুখ্য পৰীক্ষণ বহীৰ সৈতে দিয়া হৈছে । ভাষা সহায়ক সমূহ আঁচুতীয়াকৈ লৈ উত্তৰ দিব পাৰিব ।
4. এই পৃষ্ঠাত নিৰ্দিষ্ট বিষয়সমূহ কেৱল লিখিবলৈ আৰু উত্তৰসমূহ চিহ্নিত কৰিবলৈ **নীলা/কলা বল পেন** ব্যৱহাৰ কৰিবা ।
5. এইখন ভাষা বহীৰ কোড হ'ল **F**. এইটো নিশ্চিত কৰা যে উত্তৰ বহীৰ **দ্বিতীয় পিঠি**, মুখ্য পৰীক্ষণ বহী আৰু ভাষা সহায়কত একে ধৰণে এই কোডটো লিখা আছে । পৰীক্ষাৰ্থীয়ে ইয়াৰ কিবা খেলিমেলি দেখিলে নিৰীক্ষকক জনাব আৰু ভাষা সহায়ক পৰীক্ষণ বহী সলাই লব ।
6. এই পৰীক্ষণ বহীৰ দুটা খণ্ড – চতুৰ্থ আৰু পঞ্চম ইয়াত **60**টা চমুধৰণৰ প্ৰশ্ন আছে । প্ৰত্যেক প্ৰশ্নতে 1 নম্বৰকৈ দিয়া হৈছে :

   খণ্ড IV : ভাষা I (অসমীয়া) (প্ৰশ্ন 91 ৰ পৰা প্ৰশ্ন 120 লৈ)

   খণ্ড V : ভাষা II (অসমীয়া) (প্ৰশ্ন 121 ৰ পৰা প্ৰশ্ন 150 লৈ)
7. খণ্ড IV তো ভাষা I ৰ বাবে 30টা প্ৰশ্ন দিয়া হৈছে আৰু খণ্ড V ত ভাষা II ৰ বাবে 30টা প্ৰশ্ন দিয়া হৈছে । এই পৰীক্ষণ বহীত প্ৰশ্নসমূহ কেৱল অসমীয়া ভাষাৰ বাবেহে দিয়া হৈছে । **ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত যদি ভাষা I অথবা ভাষা II অসমীয়াত বাহিৰে অন্য ভাষাত প্ৰশ্ন দিয়া হৈছে তেনেহলে সেই ভাষাটোৰ প্ৰশ্ন থকা পৰীক্ষণ বহী খুজি লবা । তোমাৰ প্ৰপত্ৰত উল্লেখ কৰা ভাষাটোতহে পৰীক্ষাৰ উত্তৰ লিখিব পাৰিবা ।**
8. **পৰীক্ষাৰ্থীয়ে খণ্ড V ৰ (ভাষা II) প্ৰশ্নবোৰৰ উত্তৰ খণ্ড IV (ভাষা I) ত নিৰ্বাচিত কৰা ভাষাৰ দৰে কৰিব লাগিব ।**
9. প্ৰশ্নোত্তৰৰ বাদে বাহিৰা কাৰ্য কেৱল পৰীক্ষা বহীত থকা নিৰ্ধাৰিত ঠাইততহে কৰিব পাৰিব ।
10. প্ৰশ্নৰ উত্তৰবোৰ কেৱল OMR উত্তৰ কাকততহে লিপিবদ্ধ কৰিব লাগিব । তোমাৰ উত্তৰবোৰ সযত্নে কৰা । উত্তৰ সলাবলৈ বগা অথবা অন্য ৰং ব্যৱহাৰ কৰিব নোৱাৰিবা ।

প্ৰাৰ্থীৰ নাম (স্পষ্টভাৱে) ____________________

ৰোলনম্বৰ : সংখ্যাৰে ____________________

: আখৰেৰে ____________________

পৰীক্ষাকেন্দ্ৰ (স্পষ্টভাৱে) ____________________

প্ৰাৰ্থীৰ চহী ____________________ নিৰীক্ষকৰ চহী ____________________

Facsimile signature stamp of
Centre Superintendent ____________________

পৰীক্ষাৰ্থীয়ে নিম্নলিখিত ভাগৰ প্ৰশ্নবোৰৰ উত্তৰ তেতিয়াহে কৰিব যদি তেওঁলোকে ভাষা – **I** ৰ বিকল্প অসমীয়া লৈছে ।

→

ভাগ IV
ভাষাভাষা I
অসমীয়া

নির্দেশ : তলৰ পৰিচ্ছেদটো ভালদৰে পঢ়া । পৰিচ্ছেদৰ শেষত (প্ৰশ্ন 91ৰ পৰা 96লৈ) ছটা প্ৰশ্ন আৰু প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তলত চাৰিটাকৈ বিকল্প উত্তৰ দিয়া আছে । তাৰ পৰা অতি উপযুক্ত বিকল্প চিহ্নিত কৰি প্ৰশ্নবোৰৰ উত্তৰ কৰা ।

প্ৰাক্-ঐতিহাসিক যুগ

পৃথিৱীৰ সৃষ্টি-পাতনিৰ কোন যুগত কোন অতীজত মানৱ-জন্মৰ সূত্ৰপাত হৈছিল সেই কথা এতিয়াও অন্ধকাৰৰ গৰ্ভত । হিন্দুৰ প্ৰাচীন শাস্ত্ৰাদিত অন্যান্য জীৱ-সৃষ্টিৰ পাছতহে মানৱ-সৃষ্টি বুলি লিখা আছে । প্ৰাণীতত্ত্ববিদ্ পণ্ডিতসকলেও সিদ্ধান্ত কৰিছে, বৰ্ত্তমানে সংসাৰৰ ভিতৰত যিমানবিলাক প্ৰাণী দেখা যায়, সেই সকলো প্ৰাণীৰ পাছতহে মানুহৰ আবিৰ্ভাৱ হৈছিল । ভূতত্ত্ববিদ পণ্ডিতসকলেও পৃথিৱীৰ বয়সক বিভক্ত কৰি শেষ যুগৰ অন্ত-ভাগত মানুহৰ জন্ম হৈছিল বুলি অৱধাৰণ কৰিছে ।

মানৱৰ আদি বাসস্থান ক'ত আছিল, সেই কথা লৈও নানা পণ্ডিতে নানা মত প্ৰকাশ কৰে । সিহঁতে প্ৰথমে কোন ভূ-খণ্ডৰপৰা ওলাই সমস্ত পৃথিৱীতে সিঁচৰিত হৈ পৰিল, একে ঠাইতে উপজিছিল নে ঠায়ে ঠায়ে একে সময়তে জন্ম লাভ কৰিছিল ইত্যাদি কথা এতিয়াও সুমীমাংসিত হৈ উঠা নাই ।

আদিম মানৱবিলাক আদিতে কি খাই জীয়াই আছিল, সেই কথাও নিশ্চয়কৈ জনা নেযায় । ভূতত্ত্ববিদ্ আৰু প্ৰাণীতত্ত্ববিদ্ পণ্ডিতসকলে স্থিৰ কৰিছে যে, মানৱ-জাতি আদিতে উদ্ভিদ্‌ভোজী আছিল । যেতিয়া বহু কাল পাছত, ফল-মুল, শাক-পাচলিৰ অভাৱ হৈ আহিল, তেতিয়া মানুহে আন উপায় ল'লে । সিহঁতে মাংশভোজী জীৱবিলাকৰ কাৰ্য্য লক্ষ্য কৰিছিল, কিন্তু সেইবোৰ প্ৰাণীৰ দৰে সিহঁতৰ চোকা নখ-দাঁত নথকাত, সিহঁতে অলপ বুদ্ধি খটাব লগাত পৰিল । সিহঁতে তেতিয়া দলি, শিলগুটি বা শিলৰ চুটীয়া আদিকে প্ৰধান অৱলম্বন কৰি সেইবোৰকে ক্ৰমাৎ উন্নত কৰি অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰৰূপে ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ ধৰিলে ।

তেওঁলোকে এই অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰবোৰেৰেই পশু-পক্ষী মাৰি, সেইবোৰৰ কেঁচা মঙহ খাই জীৱন প্ৰবৰ্ত্তাইছিল বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে । অধিকাংশ পণ্ডিতৰ মতে এইবোৰ আদিম অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ বুলিয়ে নিৰ্দ্ধাৰিত হৈছে । তেতিয়া মানুহে সাধাৰণ বুদ্ধিৰে যি কৰিছিল, তাকেই যথেষ্ট বুলি ধৰিব লাগিব ।

আদিম মানুহবিলাকে হাবিত কাঠে কাঠে বা বাঁহে বাঁহে ঘঁহনি লাগি জুই উঠা, শিলত শিল পৰিলে ফিৰিঙতি ওলোৱা অৱশ্যে দেখিছিল । ইয়াৰ পৰাই সিহঁতে কাঠে কাঠে বা বাঁহে বাঁহে ঘঁহি, শিলত শিল গুটিৰে মৰিয়াই জুই তুলিবলৈ শিক্ষা কৰাটো নিতান্ত সম্ভৱ । এই কৃত্ৰিম উপায়ে জুই তোলাটোৱেই মানৱ জাতিৰ দ্বিতীয় আৱিষ্কাৰ বুলিব পাৰি । জুইৰ ওচৰত থাকিলে জাৰ গুচে, আৰু কোনো বস্তু পুৰিলে তাৰ অন্য ৰূপ ধৰে, তাকো লক্ষ্য কৰিছিল বুলি অনুমান হয় । সময়ত সেই জুইত কাঠ-বাহৰ ডাল আদিৰ আগ-গুৰি পুৰি টাঙোন-টোকোনস্বৰূপে যে ব্যৱহাৰ কৰিছিল ।

91. সৃষ্টিৰ পাতনিৰ ঠিক কোন সময়ত মানুহৰ উৎপত্তি হয়, সেই কথা

(1) এতিয়াও অজ্ঞাত

(2) সম্পূৰ্ণ সন্দেহৰ বাহিৰত

(3) সৰ্বজনবিদিত

(4) অনুমান কৰিব নোৱাৰি

92. তুলনামূলকভাৱে মানুহৰ উৎপত্তি হয় ?

(1) অন্যান্য প্ৰাণীৰ জন্মৰ সমসাময়িক ভাবে

(2) অন্যান্য প্ৰাণীৰ জন্মৰ পিছত

(3) পৃথিৱীৰ শেষ যুগত

(4) অন্যান্য প্ৰাণীৰ জন্মৰ আগতে

93. মানুহৰ আদি বাসস্থান ক'ত আছিল, সেই বিষয়ে

(1) সঠিক ক্ষিদ্ধান্তত উপনীত হ'ব পৰা হোৱা নাই

(2) অনুসন্ধান চলাই থকা হৈছে

(3) সঠিক সিদ্ধান্তত উপনীত হ'ব পৰা গৈছে

(4) সকলো পণ্ডিত একমত

94. আহাৰৰ ক্ষেত্ৰত মানুহ আদিতে আছিল

(1) তৃনভোজী

(2) সৰ্বভক্ষী

(3) মাংসাহাৰী

(4) তৃন-মাংস-উভয়ভোজী

95. আদিম মানৱে প্ৰথমে অস্ত্ৰৰূপে কি বস্তু ব্যৱহাৰ কৰিছিল ?

(1) বাঁহ

(2) দলি, শিল-চুটীয়া আদি

(3) দলি

(4) শিলগুটি

96. মানৱ জাতিৰ দ্বিতীয় আৱিষ্কাৰ কি ?

(1) কাঠে কাঠে ঘঁহনি খুওৱা

(2) টাঙোন-টোকোন নিৰ্মান কৰা

(3) কৃত্ৰিম উপায়ে জুই তোলা

(4) শিলে শিলে ঘঁহনি খুওৱা

নিৰ্দেশ : তলৰ পৰিচ্ছেদটো ভালদৰে পঢ়া । পৰিচ্ছেদটোৰ শেষত (97ৰ পৰা 105লৈ) নটা প্ৰশ্ন আৰু প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তলত চাৰিটাকৈ বিকল্প উত্তৰ দিয়া আছে । তাৰ পৰা অতি উপযুক্ত বিকল্প উত্তৰ নিৰ্বাচন কৰি প্ৰশ্নসমূহৰ উত্তৰ কৰা ।

ৰহস্যবাদ

সাধাৰণ দৃষ্টিত জড় আৰু চৈতন্যময় জগতখন বৈচিত্ৰ্যৰে পৰিপূৰ্ণ । ইয়াৰ গছ লতিকা, চৰাই চিৰিকটি, নৈ, নলা, পৰ্বত-পাহাৰ, পশু-পক্ষী, নৰ-নাৰী কোনোটোৱে এটা আনটোৰে সৈতে নিমিলে । অৰ্থাৎ জগতৰ প্ৰতিটো বস্তুৰে যেন একোটা সুকীয়া সত্তা আছে । কিন্তু কিছুমান এনেকুৱা লোক আছে যি সকলৰ চকুত এই বৈচিত্ৰ্যৰ মাজত এক ঐক্যৰ সন্ধান দৃষ্টিগোচৰ হয় । তেওঁলোকে জগতৰ বিভিন্ন সত্তাৰ বিশেষ অস্তিত্ব অনুভৱ নকৰে; বৰং সকলো সত্তাৰ গুৰিত এক পৰম সত্তাৰ অস্তিত্বহে উপলব্ধি কৰে। আন কথাত ক'বলৈ গ'লে জগতৰ সকলো বস্তু বা শক্তিৰ মূলতে হৈছে এটা পৰম শক্তি । এনে দৃষ্টিসম্পন্ন লোকক সাধাৰণতে ৰহস্যবাদী বুলিব পাৰি । ৰহস্যবাদীসকল সৎগুণ আৰু সৎ-ব্যৱহাৰৰ অধিকাৰী হ'ব লাগে ।

কোনো এটা বস্তুক ভালদৰে জানিবলৈ হ'লে আমি সেই বস্তুটোৰ নিচিনা হ'ব লাগিব; তাৰ বিষয়ে ক'লে বা চালেই নহ'ব । প্ৰেমৰ বিষয়ে জানিবলৈ হ'লে আমি নিজে প্ৰেমিক হ'ব লাগিব । সঙ্গীত বুজিবলৈ

হ'লে আমি নিজেই সঙ্গীতজ্ঞ হ'ব লাগিব । ভগৱানক জানিবলৈ হ'লে আমি নিজেই ভগৱানৰ নিচিনা হ'ব লাগিব । সেইবাবে ৰহস্যবাদীয়ে নিজেই ভগৱানৰ নিচিনা হ'বলৈ যত্ন কৰে । ভগবান আনন্দময়, প্ৰেমময়, করুণাময় । এই জগততো যিবোৰ বস্তু বা মানুহ তেনেকুৱা, তেওঁলোকক ভগবান বুলি ৰহস্যবাদীয়ে ধাৰণা কৰে । ... মানৱ-জীৱনৰ উদ্দেশ্যে হৈছে আনন্দ লাভ কৰা । ৰহস্যবাদীয়ে জীৱনৰ সকলো নিৰানন্দ আঁতৰাই আনন্দময় হ'বলৈ যত্ন কৰে । ৰহস্যবাদীজন অকল কাল্পনিকেই নহয়, ব্যৱহাৰিকো । ৰহস্যবাদী হ'ব খুজিলে অকল পৰম সৌন্দৰ্য আৰু স্বৰ্গীয় প্ৰেমৰ কথা ক'লেই নহ'ব, তেওঁলোকে সম্ভাৱ পোষণ কৰিব লাগিব আৰু সদ্‌গুণৰ অধিকাৰী হ'ব লাগিব ।

ৰহস্যবাদ প্ৰধানকৈ প্ৰাচ্যৰ দেশসমূহৰ প্ৰধান ধৰ্মবোৰৰ লগত জড়িত । খ্ৰী: যুগৰ আগতে গ্ৰীচ আৰু ইজিপ্ততো এনে ভাৱ-ধাৰাৰ উদ্ভৱ হয় । ৰহস্যবাদীসকলক প্ৰাচ্য-পাশ্চাত্য আদি ভাগত ভগাব নোৱাৰি । কিয়নো ৰহস্যবাদৰ সুৰ সকলোতে একেই । ভাৰতীয় ৰহস্যবাদৰ পৰম্পৰা পুৰাণৰ যুগৰ পৰাই আৰম্ভ হৈছে । উপনিষদ, ভাগৱত, নাৰদ-ভক্তিসূত্ৰ আৰু শাণ্ডিল্য-ভক্তিসূত্ৰ এই কেইখন গ্ৰন্থই ৰহস্যবাদী ভাব-ধাৰাৰ প্ৰতিনিধিত্ব কৰিছে ।

ৰহস্যবাদ'ৰ বিশ্লেষকসকলে ৰহস্যবাদৰ তিনিটা স্তৰ বা অৱস্থাৰ অস্তিত্ব বিচাৰি পায় । প্ৰথম অৱস্থা 'আকৰ্ষণ' দ্বিতীয় অৱস্থা 'সমকক্ষতা' আৰু তৃতীয় অৱস্থা হ'ল 'অভিন্নতা' বা 'সম্পূৰ্ণ' বিলীমতা । প্ৰথম অৱস্থাত ৰহস্যবাদীসকলে ভগৱানৰ প্ৰতি এক অবুজ আকৰ্ষণ অনুভৱ কৰে, দ্বিতীয় অৱস্থাত তেওঁলোকে নিজকে ভগৱানৰ সমতুল্য যেন অনুভৱ কৰে, নিজৰ গুণবোৰৰ ঠাইত ভগৱানৰ গুণবোৰ আচৰণ কৰে আৰু নিজকে সুন্দৰ বুলি বিবেচনা কৰে । তৃতীয় অৱস্থাত তেওঁলোকে ইহ সংসাৰত জীয়াই থকাটো ভগৱানৰ পৰা বিচ্ছেদ বা বিৰহ বুলি বিবেচনা কৰে আৰু মৃত্যুৰ যোগেদি ভগৱানৰ লগত পূৰ্ণ মিলন লাভৰ বা সম্পূৰ্ণ বিলীন হৈ যোৱাৰ কল্পনা কৰে । নলিনী বালা দেৱীৰ কবিতাত ইয়াৰ পূৰ্ণ প্ৰতিধ্বনি শুনা যায় ।

97. জড় আৰু চৈতন্যময় জগতখনৰ প্ৰকৃতি কেনেকুৱা ?

(1) ইয়াৰ নিজস্ব সত্ত্বা আছে

(2) ই বৈচিত্ৰ্যময়

(3) ই গছ-লতা, চৰাই-চিৰিকতিৰ বাসস্থান

(4) ই পশু-পক্ষী, নৰ-নাৰীৰে ভৰপূৰা

98. যিজনে বৈচিত্ৰ্যৰ মাজত ঐক্য আৰু সকলো সত্তাৰ মূলত এক পৰম সত্তাৰ সন্ধান পায়, তেওঁ

(1) দূৰদৃষ্টিসম্পন্ন লোক

(2) ৰহস্যবাদী

(3) সাধাৰণ লোক

(4) তত্ত্বান্বেষী

99. ৰহস্যবাদীৰ প্ৰধান প্ৰয়াস কি ?

(1) নিজে ভগৱানৰ নিচিনা হোৱা

(2) কেৱল করুণাময় হোৱা

(3) প্ৰেমিক হোৱা

(4) সঙ্গীতজ্ঞ হোৱা

100. ৰহস্যবাদীৰ স্বভাৱ কেনেকুৱা ?

(1) তেওঁ কেৱল সৌন্দৰ্য্যৰ সাধক

(2) তেওঁ সৌন্দৰ্য্য আৰু স্বৰ্গীয় প্ৰেমৰ সাধক

(3) তেওঁ কল্পনাবিলাসী

(4) তেওঁ কল্পনাবিলাসী, ব্যৱহাৰিক, আৰু সম্ভাৱ আৰু সদ্‌ গুণৰ অধিকাৰী

101. ৰহস্যবাদৰ উৎপত্তি ক'ত হয় ?

(1) প্ৰাচ্য, পাশ্চাত্য-উভয়তে

(2) ধৰ্মস্থানত

(3) কেৱল প্ৰাচ্যত

(4) কেৱল পাশ্চাত্যত

102. উপনিষদ, ভাগৱত, নাৰদ ভক্তিসূত্ৰ আৰু শাণ্ডিল্য ভক্তিসূত্ৰত কিহৰ প্ৰতিধ্বনি শুনা যায় ?

(1) ৰহস্যবাদী ভাবধাৰাৰ

(2) পাশ্চাত্যৰ ৰহস্যবাদৰ

(3) ৰহস্যময় সুৰৰ

(4) প্ৰাচ্যৰ ৰহস্যবাদৰ

103. ৰহস্যবাদৰ কেইটা অৱস্থা বা স্তৰ পৰিদৃষ্ট হয় ?

(1) দুটা

(2) কেইবাটাও

(3) এটা

(4) তিনিটা

104. ৰহস্যবাদৰ প্ৰথম অৱস্থা হ'ল

(1) বিলীনতা

(2) বিৰহ

(3) সমকক্ষতা

(4) আকৰ্ষণ

105. নলিনী বালা দেৱীৰ কবিতাত কিহৰ প্ৰতিধ্বনি শুনা যায় ?

(1) ভগৱানৰ সদ্‌গুণবোৰ আহৰণ কৰাৰ

(2) মৃত্যুৰ যোগেদি ভগৱানৰ লগত মিলনৰ আকাংক্ষাৰ

(3) ভগৱানৰ সমতুল্য হোৱাৰ আকাংক্ষাৰ

(4) ভগৱানৰ পৰা বিচ্ছেদৰ

নিৰ্দেশ : প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তলত দিয়া বিকল্পৰ মাজৰ পৰা অতি উপযুক্ত বিকল্পটো বাচি উলিয়াই তলত দিয়া প্ৰশ্ন-বিলাকৰ উত্তৰ কৰা ।

106. লিখন দক্ষতা পৰীক্ষাত ব্যৱহৃত এটা সংহত পদ্ধতি হ'ল –

(1) বিশেষণৰ ব্যৱহাৰ

(2) অব্যয়ৰ প্ৰয়োগ

(3) খণ্ডবাক্যৰ প্ৰয়োগ

(4) উহ্য/লুপ্ত শব্দ সংস্থাপন

107. যদি কোনো এটা লিখনি চমু, সম্পূৰ্ণ আৰু তয় পুৰুষত লিখা হয়, আৰু তাত প্ৰসংগৰ বাহিৰলৈ যোৱা নহয়, আবেগৰ আতিশয্য নাথাকে অথবা লিখনিটো সুসংগঠিত হয়, সেইটো নিসন্দেহে হ'ব –

(1) প্ৰতিবেদন

(2) খবৰৰ কাগজৰ প্ৰবন্ধ

(3) বিজ্ঞাপন

(4) স্মাৰকপত্ৰ

108. 'সূৰ্যগ্ৰহণ কেতিয়া ?' – এই প্ৰশ্নটোৰ ক্ৰিয়াপদ কোন কালত আছে ?

(1) ভবিষ্যৎ কালত

(2) চলিত বৰ্তমান কালত

(3) অতীত কালত

(4) বৰ্তমান কালত

109. NCF 2005 [3.1.4] ৰ অনুমোদন অনুসৰি বিদ্যালয়সমূহে প্ৰায় ক্ষেত্ৰতে পঠন-লিখনৰ ওপৰত বেছি গুৰুত্ব নিদিয়ে, বিশেষকৈ

(1) হিন্দী শিক্ষাত

(2) আন বিদেশী ভাষা শিক্ষাত

(3) ইংৰাজী শিক্ষাত

(4) মাতৃভাষা শিক্ষাত

110. নাটক বা চিনেমাত অভিনেতাই যাক প্ৰতিনিঠিত্ব কৰে তাক কোৱা হয় –

(1) ভাৱৰীয়া

(2) চৰিত্ৰ

(3) প্ৰযোজক

(4) অভিনয়

111. যেতিয়া আপুনি সোধে 'আমাৰ লক্ষ্য কি ?' মই এটা শব্দত উত্তৰ দিব পাৰোঁ, 'বিজয়' – এনে ধৰণৰ প্ৰশ্নক কোৱা হয় –

(1) আলংকাৰিক

(2) উচ্চ শৈলীযুক্ত

(3) সৌঁৰৰনাত্মক

(4) ব্যাখ্যাত্মক

112. ৰেলৰ এজন সহযাত্ৰীৰ আসন খিৰিকিৰ কাষত পৰিছে । তেওঁ খিৰিকিখন বন্ধ কৰি দিয়াটো তুমি বিচৰা । তুমি তেওঁক কেনে ধৰণে অনুৰোধ কৰিলে বিনম্ৰতা প্ৰকাশ পাব ?

(1) খিৰিকিখন বন্ধ কৰিবা নে

(2) খিৰিকিখন বন্ধ কৰিব পাৰিবা নে

(3) খিৰিকিখন বন্ধ কৰা

(4) খিৰিকিখন বন্ধ কৰাচোন

113. তলৰ কথোপকথনখিনি পঢ়া

শিক্ষক : ইয়াৰ সলনি তুমি এখন গল্পৰ কিতাপ পঢ়িবা নেকি ?

ছাত্ৰ : হব চাৰ ।

শিক্ষক : তেন্তে তাকেই কৰা ।

ইয়াত শিক্ষকে –

(1) ভাষা-কাৰ্যক্ৰমত বিনম্ৰতাৰ সংযোগ কৰিছে

(2) তৎকালে পঢ়া আৰম্ভ কৰিবলৈ কৈছে

(3) ছাত্ৰৰ অনুৰোধত সমতি জনাইছে

(4) বিকল্প ভাষা-কাৰ্যক্ৰমৰ পৰামৰ্শ দিছে

114. তলৰ কোনটো অব্যয় শব্দ ?

(1) সৃজন

(2) প্ৰত্যেক

(3) তথাপি

(4) পিছলা

115. 'পাৰি', 'পৰাযায়', 'সম্ভৱতঃ', আদি শব্দৰ প্ৰয়োগে আলোকপাত কৰে –

(1) আগত বহা শব্দৰ ওপৰত

(2) বাক্যগত স্থিতিৰ ওপৰত

(3) অৰ্থৰ ওপৰত

(4) প্ৰসংগৰ ওপৰত

116. পিয়নজনে পুৱা ১১ বজাত চিঠিখন দিলে ।

চিঠিখন পিয়নজনৰ দ্বাৰা ১১ বজাত দিয়া হল ।

তলৰ কোনটো বিষয়ৰ প্ৰতি ছাত্ৰৰ মনযোগ আকৰ্ষণ কৰি ওপৰৰ বাক্য দুটাৰ মাজত থকা ভেদ দেখুৱাব পাৰি ?

(1) দুয়োটা বাক্যত 'কৰ্তা' আৰু 'কৰ্ম'ৰ ভূমিকা

(2) ক্ৰিয়াৰূপৰ পৰিৱৰ্তন

(3) 'দ্বাৰা' শব্দৰ প্ৰয়োগ

(4) শব্দৰ সজ্জাৰ অদল বদল

117. তলৰ কোনযোৰ শব্দই 'মনন শৈলী' (Cognitive style) বুজায় ?

(1) সৰ্বাত্মক/বিশ্লেষনাত্মক

(2) ব্যাখ্যাত্মক/আবেগিক

(3) আবেগিক/অনুভূতিসম্পন্ন

(4) কৰ্তা/কৰ্ম

118. ভাষা-শিক্ষা আৰু মূল্যায়নৰ ক্ষেত্ৰত 'পোর্টফলিঅ' (Portfolio) শব্দই বুজায় –

(1) শিকাৰুৰ প্ৰগতিৰ ৰূপৰেখা দেখুওৱা দীৰ্ঘ কালৰ ভিতৰত কৰা কাম কাজৰ সংগ্ৰহ

(2) প্ৰত্যেক নিৰ্ধাৰিত সময় চক্ৰৰ অন্তত শিক্ষকে ৰখা ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ আচৰণৰ অভিলেখ

(3) সময়ে সময়ে কাগজে কলমে কৰা পৰীক্ষা

(4) নিৰ্ধাৰিত সময় চক্ৰৰ শেষত কৰা মৌখিক পৰীক্ষা

119. পঢ়াৰ সময়ৰ 'সাংকেতিক লিপিৰ সাৰোদ্ধাৰ' (decode) বুলিলে বুজায় –

(1) বিশ্লেষণ কৰা আৰু বুজিপোৱা

(2) এটা বিদেশী ভাষা বুজি পোৱা

(3) ICTত ব্যৱহাৰ কৰা এক প্ৰক্ৰিয়া

(4) জটিল বাক্য ভঙা

120. বক্তা১ : তোমাৰ মাৰা বৰ্তমান ঘৰ আহি পাইছে নে ?

বক্তা২ : হয় ।

শিকাৰুৰ কথন-শ্ৰৱন কৌশলৰ মূল্যায়নৰ ক্ষেত্ৰত ওপৰত দিয়া কথোপোকথনত কাৰ নম্বৰ কটা যাব পাৰে ?

(1) দুয়োজনৰে

(2) কাৰো নহয়

(3) প্ৰথম বক্তাৰ

(4) দ্বিতীয় বক্তাৰ

পৰীক্ষাৰ্থীয়ে নিম্নলিখিত ভাগৰ

প্ৰশ্নবোৰৰ উত্তৰ তেতিয়াহে

কৰিব যদি তেওঁলোকে ভাষা – **II** ৰ

বিকল্প অসমীয়া লৈছে ।

→

ভাগ V
ভাষা II
অসমীয়া

নির্দেশ : প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তলত দিয়া বিকল্প উত্তৰ বিলাকৰ মাজৰ পৰা অতি উপযুক্ত বিকল্পটো বাচি উলিয়াই তলত দিয়া প্ৰশ্নসমূহৰ উত্তৰ কৰা ।

121. একেটা শিক্ষানুষ্ঠানৰ ভিতৰতে শিক্ষাগত সম্পদৰ ভাগ বটোৱাৰা কৰা যোগাযোগ কৌশলক কোৱা হয় –

(1) ডেলনেট

(2) এৰনেট

(3) ইন্টাৰনেট

(4) ইন্ট্ৰানেট

122. 'ভাৰ্চুৱেল ৰিয়েলিটি' (virtual reality) হ'ল –

(1) কম্পিউটাৰৰ যোগে দৃশ্যমান কৰিব পৰা এটা অগ্ৰগামী (advanced) আহিলা

(2) দৃশ্যমান চিত্ৰ থকা ফলক

(3) টেলিফোন যোগে কৰা আলোচনা

(4) দৃশ্যমান আলোচনা

123. শব্দৰ পশ্চাৎগঠনৰ এটা উদাহৰণ হ'ল –

(1) হিম + আলয় > হিমালয়

(2) কথা + উপকথন > কথোপকথন

(3) মহা < মাহী

(4) ইংৰাজী আৰ্মচেয়াৰ > অস আৰামী চকি

124. যুগ্মশব্দৰ উদাহৰণ হ'ল –

(1) সময় আৰু জোৱাৰ

(2) নদ-নদী, ৰাধা-কৃষ্ণ

(3) মূৰৰ বিষ

(4) জাতীয়তাবাদী

125. 'ভাষা আহৰণ' হ'ল –

(1) মানৱ মগজুৰ অন্তৰ্নিহিত ক্ষমতাৰ হেতুকে মাতৃভাষা বা দ্বিতীয় ভাষা শিক্ষা

(2) মাতৃভাষা শিকন পৰিৱেশক পুনৰ উজ্জীৱিত কৰা

(3) প্ৰয়োজনীয় শব্দমালা মুখস্থ কৰা আৰু ব্যৱহাৰ কৰা

(4) ব্যাকৰণৰ প্ৰণালীবদ্ধ বিশ্লেষণ, উপলব্ধি আৰু শব্দমালা মুখস্থ কৰা

126. 2005 চনৰ NCFৰ মতে __________ শিকোৱাৰ উদ্দেশ্য হ'ল সাক্ষৰতাৰ জৰিয়তে অমূৰ্ত চিন্তা আৰু জ্ঞান আহৰণৰ এটা শক্তিশালী আহিলা যোগান ধৰা ।

(1) এটাভাষা

(2) শাস্ত্ৰীয়ভাষা

(3) তিনিটাভাষা

(4) দুটাভাষা

127. খণ্ডবাকীয় ক্ৰিয়াৰ উদাহৰণ হ'ল –

(1) ভাল পোৱা/সন্দেহ লোৱা

(2) চাই-চিতি/চকু জুৰোৱা

(3) বাছ-আস্থান/গাড়ী ৰখোৱা ঠাই

(4) ইফালে সিফালে চোৱা/কেৰাহীকৈ চোৱা

128. বিষয়বস্তু-কেন্দ্ৰিক শিক্ষা-ব্যৱস্থা হ'ল সেইটো, য'ত শিকন অভিজ্ঞতা সংগঠিত কৰা হয় –

(1) শিক্ষণীয় বিষয়বস্তুলৈ লক্ষ্য ৰাখি

(2) শিক্ষাগত কলা-কৌশললৈ লক্ষ্য ৰাখি

(3) ছাত্ৰৰ ৰুচিলৈ লক্ষ্য ৰাখি

(4) শিক্ষকৰ বিষয়ৰ ওপৰত থকা দক্ষতালৈ লক্ষ্য ৰাখি

129. ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ সামগ্ৰিক যোগ্যতা নিৰূপনৰ মাপকাঠি হ'ল –

(1) ছাত্ৰৰ দক্ষতাৰ সাধাৰণ ধাৰণা

(2) ছাত্ৰই লাভ কৰা নম্বৰ-সূচী

(3) মূল্যায়নৰ সুচিন্তিত নীতিৰ প্ৰয়োগ

(4) প্ৰশ্ন অনুসৰি নম্বৰ বিতৰণ

130. 'ঐৰাৱত' শব্দত 'ঐ'ৰ ধ্বনিলিপি হ'ল –

(1) অউ

(2) ওউ

(3) ওই

(4) অই

131. পঢ়োঁতে তথ্য আহৰণ কৌশলক কোৱা হয় –

(1) সংক্ষেপ লিখন

(2) অৰ্থবোধ

(3) টোকা লোৱা

(4) টোকা কৰা

132. ভাষাশিক্ষাৰ পাঠ্যক্ৰমত 'সংলাপ লিখন' অন্তৰ্ভুক্ত কৰাৰ প্ৰাথমিক উদ্দেশ্য হ'ল –

(1) কথোপকথন দক্ষতা বঢ়োৱা

(2) সৃজনশীলতাক উদগনি দিয়া

(3) লিখন দক্ষতা বঢ়োৱা

(4) ব্যাকৰণগত নিৰ্ভুলতা নিশ্চিত কৰা

133. যিখিনি শিকোৱা হয়, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে অবিকল সেইখিনি নিশিকে, কাৰণ

(1) শিক্ষকৰ সামাজিক-আৰ্থিক স্তৰ ছাত্ৰতকৈ বহুত বেলেগ হ'ব পাৰে

(2) ছাত্ৰ-ছাত্ৰী বিভিন্ন মাত্ৰাৰ যোগ্যতা আৰু ব্যক্তিত্বৰ অধিকাৰী হয় আৰু তেওঁলোক বেলেগ বেলেগ পটভূমিৰ পৰা আহে

(3) শিক্ষক বা শিকাৰুৱে কোনো বিষয় সম্পূৰ্ণৰূপে আয়ত্ত কৰিব নোৱাৰে

(4) অনানুষ্ঠানিক আলোচনাত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে বেছি মনযোগ দিয়ে

134. আৰম্ভনি বাক্যই প্ৰধান ধাৰণা ব্যক্ত কৰে –

(1) পৰিচ্ছেদত

(2) কথোপকথনত

(3) ৰচনাত

(4) বক্তৃতাত

135. গঠনতত্ত্ব (Constructivism) হ'ল এনে এটা সূত্ৰ (theory) য'ত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে

(1) শিক্ষকৰ সহায় লাভ কৰে আৰু গৱেষণা কৰি নতুন সূত্ৰ উদ্ভাৱনৰ কাৰণে বিভিন্ন মাধ্যমৰ ব্যৱহাৰ কৰে

(2) নিজৰ বৰীয়াকৈ শিক্ষাগত সহায় (learning aids) সৃজন কৰে আৰু তাৰ পৰা হাতে কামে কৰা অভিজ্ঞতা লাভ কৰে

(3) বহুতো বিসদৃশ দৃষ্টান্ত অধ্যয়ন কৰি সুচিন্তিত সিদ্ধান্তত উপনীত হয়

(4) বস্তু-জগতৰ অভিজ্ঞতা আৰু তাৰ ওপৰত কৰা চিন্তা-চৰ্চাৰ যোগেদি বহিৰ্জাগতিক উপলব্ধি আৰু জ্ঞান লাভ কৰে

নির্দেশ : তলৰ পৰিচ্ছেদটো ভালদৰে পঢ়া । পৰিচ্ছেদৰ শেষত [136ৰ পৰা 144লৈ] নটা প্ৰশ্ন আৰু প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তলত চাৰিটাকৈ বিকল্প উত্তৰ দিয়া আছে । তাৰ পৰা অতি উপযুক্ত বিকল্প চিহ্নিত কৰি প্ৰশ্নবোৰৰ উত্তৰ কৰা ।

মূল্যবোধ

মূল্যবোধ-শিক্ষা ধাৰণাটো ভাৰতবৰ্ষৰ শিক্ষা ব্যৱস্থাত একেবাৰে নতুন বুলি ক'ব নোৱাৰি । ভাৰতবৰ্ষৰ প্ৰাচীন শিক্ষা ব্যৱস্থা আছিল মূল্যবোধ আধাৰিত । শিক্ষাৰ আন এক উদ্দেশ্য হৈছে মূল্যবোধ সৃষ্টি কৰা । সমাজত মানুহে মৰ্যাদাসম্পন্নভাৱে জীয়াই থাকিবলৈ হ'লে মূল্যবোধৰ সৃষ্টি আৰু বিকাশ অতি প্ৰয়োজনীয় । মূল্যবোধৰ ধাৰণা মানুহৰ কৰ্ম আৰু চিন্তাৰ লগত ইমান গভীৰ আৰু বিস্তৃতভাৱে জড়িত হৈ আছে যে ইয়াৰ ব্যাখ্যা আগবঢ়োৱাটো খুবেই কঠিন কাম । প্ৰথম অৱস্থাত 'মূল্য' শব্দটো কেৱল অৰ্থনৈতিক উদ্দেশ্যতহে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল । বহল অৰ্থত চাবলৈ গ'লে, 'মূল্য' হৈছে কোনো বস্তু, অৱস্থা বা কাৰ্য, যিয়ে ব্যক্তিৰ প্ৰয়োজন বা ইচ্ছা পূৰণ কৰে । গতিকে, 'মূল্য'ই সেইবোৰ বস্তুকে উনুকিয়াই যিবোৰ ব্যক্তিয়ে বিচাৰে । আকৌ, মানুহে বহুতো বস্তুৱেই বিচাৰে, যেনে – টকা-পইচা, সম্পত্তি, খাদ্য, নিৰাপত্তা, সুখ-শান্তি ইত্যাদি । এই সকলোবোৰ ব্যক্তিৰ কাৰণে মূল্যৱান । আনহাতে, মানুহে বহুতো বস্তু নিবিচাৰে বা আশ্য নকৰে; যেনে – ক্ষুধা, অজ্ঞতা, বেমাৰ-আজাৰ, অশান্তি আদি । এইবোৰ সেইবাবে মূল্যহীন । গতিকে এনে অৰ্থত মূল্যবোধৰ কোনো ভাল-বেয়া বা উচ্চ-নিম্নৰ প্ৰশ্ন জড়িত নাথাকে । আনকি ড্ৰাগছ্-আসক্ত এজন ব্যক্তিৰ বাবে ড্ৰাগেই হ'ব বেছি মূল্যবান । সেইদৰে কোনোবাই কাৰোবাক আঘাত কৰি ভাল পালে সেইটোৱে তেওঁৰ বাবে মূল্যবান হ'ব পাৰে ।

মানুহ সামাজিক জীৱ । গতিকে কেৱল ব্যক্তিৰ প্ৰয়োজন পূৰণৰ ধাৰণাৰে মূল্যবোধক বিচাৰ কৰিব নোৱাৰি । ব্যক্তিৰ প্ৰয়োজন পূৰণ কৰা বস্তুক মূল্যৱান নহয় বুলি অৱশ্যে ক'ব নোৱাৰি; কিন্তু ব্যক্তিৰ প্ৰয়োজন পূৰণে যদি আনৰ অপকাৰ কৰে বা সামাজিক জীৱনত অনিষ্ট সাধন কৰে, তেনেহ'লে তেনে কাৰ্যৰ কোনো ধৰণৰ মূল্য নাই । প্ৰকৃততে মূল্যবোধক সামাজিক দৃষ্টিকোণৰ পৰাহে বিচাৰ কৰা হয় । সহজ অৰ্থত মূল্যবোধ হৈছে আমাৰ সামাজিক জীৱন সুস্থভাৱে পৰিচালনা কৰিবৰ বাবে বা সামাজিক জীৱন নিয়ন্ত্ৰণ কৰাৰ বাবে কিছুমান নীতি আৰু আদৰ্শ – যিবোৰ

মানুহে শিক্ষণ আৰু সামাজিকীকৰণৰ যোগেদি আয়ত্ত কৰে ।

মূল্যবোধ হৈছে মানুহৰ জীৱনৰ কিছুমান নিৰ্দেশিকা-নীতি যিবোৰ মানুহৰ দৈহিক, মানসিক উন্নতি তথা সমাজৰ কল্যাণৰ বাবে হিতকৰ । সমাজত প্ৰচলিত ধৰ্মীয় বিশ্বাস, জীৱন দৰ্শন, নৈতিক আদৰ্শ, ৰাজনৈতিক আদৰ্শ, আচাৰ-ব্যৱহাৰ, দৈনন্দিন জীৱনৰ কাৰ্যাৱলী – এই সকলোবোৰ মূল্যবোধে সামৰি লয় । আকৌ, মূল্যবোধসমূহ কোনো ব্যক্তিয়ে জন্মতে আহৰণ কৰি নাহে, ইয়াক আয়ত্ত কৰে সামাজিক পৰিৱেশতহে ।

আদৰ্শবাদী দাৰ্শনিকসকলৰ মতে, সত্যম-শিৱম-সুন্দৰম, এই তিনিটা হৈছে চিৰন্তন মূল্যবোধ; যাৰ কোনো পৰিৱৰ্তন নাই । এই মূল্যবোধসমূহ সমাজতে আছে । মানুহৰ দায়িত্ব হ'ল কেৱল এইবোৰ আৱিষ্কাৰ কৰা বা উপলব্ধি কৰা । চিৰন্তন মূল্যবোধসমূহৰ কোনো পৰিৱৰ্তন নাই । প্ৰকৃতিবাদী দাৰ্শনিকসকলে মূল্যবোধৰ ক্ষেত্ৰত বস্তুবাদী জগতখনৰ ওপৰতহে বেছি গুৰুত্ব দিছে । তেওঁলোকৰ মতে, বস্তু বা প্ৰকৃতিয়েহে মূল্যবোধ নিৰূপণ কৰে । প্ৰয়োগবাদী দাৰ্শনিকসকলে কিন্তু সম্পূৰ্ণ বেলেগ মত প্ৰকাশ কৰা দেখা যায় । তেওঁলোকে কোনো ধৰণৰ চিৰন্তন মূল্যবোধত বিশ্বাস নকৰে । তেওঁলোকৰ মতে, মূল্যবোধৰ সৃষ্টি যেনেকৈ সমাজে কৰে তেনেদৰে পৰিৱৰ্তনো কৰে সমাজে । প্ৰকৃততে মূল্যবোধ সম্পূৰ্ণৰূপে সমাজৰ পৰিৱেশ আৰু প্ৰয়োজনীয়তা সাপেক্ষে পৰিৱৰ্তন হয় । সমাজৰ পৰিৱৰ্তনৰ লগে লগে নতুন নতুন মূল্যবোধৰ সৃষ্টি হয় ।

136. ভাৰতীয় শিক্ষা ব্যৱস্থাত মূল্যবোধৰ শিক্ষা

(1) অৰ্বাচীন

(2) আওপুৰানি

(3) একেবাৰে নতুন

(4) নতুন নহয়

137. মূল্যবোধৰ ধাৰণা কিহৰ লগত জড়িত ?

(1) মানুহৰ চিন্তাৰ লগত

(2) মানুহৰ আৰ্থিক অৱস্থাৰ লগত

(3) মানুহৰ কৰ্ম আৰু চিন্তাৰ লগত

(4) মানুহৰ কৰ্মৰ লগত

138. 'মূল্য' হৈছে মানুহৰ প্ৰয়োজন পূৰণ কৰিব পৰা –

(1) কোনো কাৰ্য

(2) কোনো বস্তু, অৱস্থা বা কাৰ্য

(3) টকা পইচা

(4) কোনো বস্তু

139. ব্যক্তিৰ প্ৰয়োজন পূৰণ কৰিব পৰা সকলোবোৰ বস্তু বা কাৰ্যই প্ৰকৃত অৰ্থত

(1) মূল্যহীন বুলিব নোৱাৰি

(2) বাঞ্ছিত নহয়

(3) মূল্যৱান নহয়

(4) মূল্যৱান

140. মূল্যবোধৰ প্ৰকৃত অৰ্থ হৈছে –

(1) কিছুমান সামাজিক আদৰ্শ

(2) সামাজিকীকৰণ

(3) কিছুমান সামাজিক নীতি আৰু আদৰ্শ

(4) কিছুমান সামাজিক নীতি

141. মানুহে মূল্যবোধৰ ধাৰণা কেনেকৈ আহৰণ কৰে ?

(1) জন্মগতভাৱে

(2) ধৰ্মীয় বিশ্বাসৰ জৰিয়তে

(3) সামাজিক পৰিবেশৰ প্ৰেৰনাত

(4) শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ যোগেদি

142. এই পাঠত কেনে ধৰণৰ দাৰ্শনিকৰ মত ডাঙি ধৰা হৈছে ?

(1) আদৰ্শবাদী, প্ৰকৃতিবাদী আৰু প্ৰয়োগবাদী

(2) সমাজবাদী

(3) আদৰ্শবাদী

(4) প্ৰয়োগবাদী

143. 'সত্যম, শিৱম আৰু সুন্দৰম'ক চিৰন্তন মূল্যবোধ বুলি কোৱা হৈছে, কাৰণ

(1) এইবোৰৰ কোনো পৰিবৰ্তন নহয়

(2) এইবোৰ বৰ্তমান আবিষ্কাৰ কৰা হৈছে

(3) এইবোৰ সমাজতে আছে

(4) এইবোৰৰ কথা দাৰ্শনিকসকলে কৈছে

144. প্ৰয়োগবাদী দাৰ্শনিকসকলৰ মতে মূল্যবোধ

(1) চিৰন্তন বুলিব নোৱাৰি

(2) পৰিবৰ্তিত নহয়

(3) বস্তুবাদী জগতখনৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল

(4) চিৰন্তন

নির্দেশ : তলৰ পৰিচ্ছেদটো ভালদৰে পঢ়া । পৰিচ্ছেদটোৰ শেষত [145 ৰ পৰা 150লৈ] ছটা প্ৰশ্ন আৰু প্ৰতিটো প্ৰশ্নৰ তলত চাৰিটাকৈ বিকল্প উত্তৰ দিয়া আছে । তাৰ পৰা অতি উপযুক্ত বিকল্প উত্তৰ নিৰ্বাচন কৰি প্ৰশ্নসমূহৰ উত্তৰ কৰা ।

অসমৰ পুৰণি খেল-ধেমালি

আহোম যুগত ক্ৰীড়াই সৰ্বাধিক পৃষ্ঠপোষকতা পাইছিল স্বৰ্গদেউ ৰুদ্ৰসিংহৰ দিনত । আহোম ৰাজ্যৰ বিভিন্ন অঞ্চলত পুখুৰী খান্দি জলক্ৰীড়াৰ প্ৰতি (সাঁতোৰ আদি) জনসাধাৰণক আকৃষ্ট কৰিছিল । অৱশ্যে তেওঁ পেভিলিয়ন সদৃশ মঞ্চ নিৰ্মাণ কৰিও খেলৰ প্ৰতি থকা তেওঁৰ মোহ প্ৰকাশ কৰিছিল । তেওঁ ১৫-১৬ হাতৰ শালকাঠৰ খুঁটাৰে নিৰ্মাণ কৰিছিল এই মঞ্চ । আহোম যুগৰ কেবাবিধো খেল এতিয়া লুপ্তপ্ৰায় । এইখিনিতে উল্লেখ কৰাটো উচিত হ'ব যে আহোম যুগত কোনো ৰজাৰ অভিষেক হ'লে অথবা ৰাজপৰিয়ালত পুত্ৰ আদিৰ জন্ম হ'লে প্ৰায় এসপ্তাহ জুৰি বিভিন্ন খেলৰ আয়োজন কৰিছিল । ই বৰ্তমান ক্ৰীড়া সমাৰোহৰ লেখীয়া আছিল ।

এতিয়া আহোঁ বিহুৰ সময়লৈ । বিহুৰ সময়ত নৈ, পুখুৰী আদিত নাওখেল অনুষ্ঠিত হৈছিল । একেদৰে কিছুমান পাহোৱাল ডেকা ল'ৰাই মালযুঁজত ভাগ লৈছিল । এই মালযুঁজ বৰ্তমানৰ ৰেষ্টলিং অথবা মল্লযুদ্ধৰ লেখীয়া আছিল । ইয়াৰ উপৰিও মহাবাহু ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ দুয়োপাৰে অসংখ্য খেল জনসাধাৰণৰ মাজত প্ৰচলিত আছিল । এই খেলসমূহৰ অন্যতম হ'ল — হাউ খেল, ঢোপ খেল, টাংগুটি, ঘিলা খেল, লুকা-ভাকু, বুন্দিয়া হাউ, কড়ি খেল ইত্যাদি । হাউগুদু খেলক বৰ্তমান কাবাডীৰ আদিৰূপ বুলিব পাৰোঁ । হাউগুদুক কৰ্ণাটকত ছেদুগুদু, কেৰালাত ৱণ্ডি কালি, পঞ্জাৱত জব্বৰ ঘানা হিচাপে জনা যায় । এই সময়ৰ আন এবিধ প্ৰিয় খেল হ'ল — ঢোপ । ইয়াৰ জন্ম ক'ত হৈছিল সেয়া কোনেও ক'ব নোৱাৰে । এইবিধ খেল যে আহোম যুগতো জনপ্ৰিয় আছিল তাৰ অলেখ উদাহৰণ পোৱা যায় । ব্ৰিটিছ ৰাজত্বৰ শেষছোৱাত তেজপুৰৰ পৰা আঠ কিলোমিটাৰ দূৰৰ মদপীৰ ঢেকেৰিপাৰ নামৰ বৃহৎ বাকৰি এখনত এইবিধ খেলৰ সমাৰোহ অনুষ্ঠিত হৈছিল । পিছত কোকৰাঝাৰৰ বিনোদ ব্ৰহ্ম নামৰ এগৰাকী খেলুৱৈয়ে এইবিধ খেল জনপ্ৰিয় কৰি তোলাৰ বাবে প্ৰয়াস কৰিলেও ই সফল নহ'ল । আমাৰ থলুৱা খেলবিলাক একত্ৰিত কৰি ইয়াক জনমানসত প্ৰাতষ্ঠিত কৰাৰ বাবে ১৯৮৯ চনত অৱশ্যে প্ৰচেষ্টা আৰম্ভ কৰিছিল ভাৰত চৰকাৰৰ তৰফৰ পৰা । ভাৰতীয় ক্ৰীড়া প্ৰাধিকৰণ অথবা ছাইৰ তৰফৰ পৰা শিৱসাগৰৰ ঐতিহ্যমণ্ডিত ৰংঘৰৰ বাকৰিত ১৯৮৯ চনত ইণ্ডিজেনাছ্ গেমছ্ নাম দি ক্ৰীড়া সমাৰোহ আয়োজন কৰিছিল । উল্লেখযোগ্য